वसंत ऋतु : मार्च 2023

वर्ष-2, अंक-2

देशधारा

शिलांग, मेघालय

वर्ष -2, अंक -2 : बसंत ऋतु - मार्च - 2023 ई.

संरक्षिका : सुश्री तसलीमा नसरीन

देशधारा

साहित्य, चिंतन और विमर्श को समर्पित वार्षिक पत्रिका

सम्पादक

भरत प्रसाद

उप सम्पादक

सुनील कुमार सॉ : आलोक सिंह

शिलांग, मेघालय

मुद्रण एवं प्रकाशन : अमन प्रकाशन 104-A/80C-रामबाग कानपुर -208012 (उ.प्र.)
फोन नं. 0512-3590496 (ऑफिस)
मो. नं. 09044344050 (ऋषभ बाजपेयी)

ईमेल : amanprakashan0512@gmail.com

मूल्य : ₹ 100.00
संस्थाओं के लिए : ₹ 200.00
वार्षिक सदस्यता : ₹ 150.00 (डाक खर्च सहित)

खाता संख्या
(देशधारा पत्रिका) Bharat Prasad Tripathi
A/C.No. : 20072477616 (Saving Account)
IFS Code : SBIN0000181
Branch – 00181
SBI Branch, M.G. Road, Near GPO, Shillong

सम्पादकीय सम्पर्क : हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय - 793022
मो.नं. : 09774125265,
09383049141

ईमेल : deshdhar@gmail.com

समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र शिलाँग, मेघालय होगा।
नोट : प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।
सम्पादन एवं सह सम्पादन पूर्णत: अवैतनिक

छायांकन : बंशीलाल परमार, मंदसौर, (मध्य प्रदेश), मो.-9926494975

आवरण : अभिनव बाजपेई, अमन प्रकाशन

स्वामी : सम्पादक-प्रकाशक द्वारा क्वार्टर नं. P-36, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग (नेहू परिसर)- 793022 से सम्पादित एवं अमन प्रकाशन, 104-A/80C, रामबाग, कानपुर -208012,(उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

अनुक्रम

सम्पादकीय : *विपश्यना* : भरत प्रसाद

1. **सम्यक दृष्टि :** अपने समय से कुछ सवाल
   गोपाल प्रधान
2. **तीसरा क्षण-1 :** रवीन्द्र मानस में प्रान्तवासी
   सोमा बंदोपाध्याय
3. **तीसरा क्षण-2 :** भाषाई अस्मिता, राष्ट्र और आदिवासी
   प्रभाकर सिंह
4. **तीसरा क्षण-3 :** संथाल विद्रोह : समकालीन प्रासंगिकता
   कुमारी शुभ्रा
5. **गद्यांतर :** अथ आदिवासी विमर्श कथा
   पंकज मित्र
6. **सीमान्तर-1 :** फिदेल कास्त्रो के प्रति (पब्लोनेरुदा)
   अनुवादक- अरुण कमल
   प्रिय इतिहास **:** (शारा मैकलम) अनु.- अरुण कमल
   सनक गया पूंजीवाद **:** (द माईटी स्पैरो) अनु.- अरुण कमल
   सेल सहस्राब्दि धमाका : द्रुतपाठ (केंडेल हिपोलिट) अनु.- अरुण कमल
   सच और नतीजे **:** (एडवर्ड बा) अनु.- अरुण कमल
   कविता की एक शाम **:** (मेरविन मारिस) अनु.- अरुण कमल
7. **सीमान्तर-2 :** निकानोर पारा की कविताएँ
   अनुवादक-सुरेश सलिल
8. **सीमान्तर-3 :** थाईलैंड के कवि सुन्दरभू की कविताएँ
   अनुवादक – कित्तिपोंग बुन्कार्ड
9. **देशेर माटी-1 :** समकालीन मलयालम कवि और कविताएँ
   अनुवादक- संतोष अलेक्स
10. **देशेर माटी-2 :** गायत्रीबाला की कविताएँ (उड़िया कवयित्री)
    अनुवादक-राजेंद्र प्रसाद मिश्र
11. **हिन्दवी :** कात्यायनी की कविताएँ

देवी प्रसाद मिश्र की कविताएँ
एस.आर.हरनोट की कविताएँ
स्वप्निल श्रीवास्तव की कविताएँ
प्रतापराव कदम की कविताएँ
विमलेश त्रिपाठी की कविताएँ
निदा नवाज की कविताएँ
भास्कर चौधरी की कविताएँ
ब्रज श्रीवास्तव की कविताएँ
पराग पावन की कविताएँ
उषा दशोरा की कविताएँ
योगेश ध्यानी की कविताएँ

12. **कथागोई**

तुम्हारा इंतजार है	उषाकिरण खान
धर्मो रक्षति रक्षितः	अवधेश प्रीत
फेसबुक	जयश्री राय
बंद दरवाज़ा	मुरारी शर्मा
ग्रहण	रणीराम गढ़वाली

13. **पूर्वाकाश -** तारोसिंदिक की कवितायेँ
14. **दृश्यपट -** द लास्ट लाफ़ : खुशीपूर्ण जिन्दगी में यकीन
    प्रमोद कुमार बर्णवाल
15. **बेहन -** आशीष मोहन की कविताएँ
16. **यादों की यात्रा :** मिथिलेश श्रीवास्तव
17. **कविता , समय, समाज और कवि :** निशांत
18. **आरपार (पुस्तक समीक्षा)**
    1. वारसा डायरी (रवि रंजन): कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है : गरिमा श्रीवास्तव
    2. अंतस की खुरचन (यतीश कुमार) रश्मि बजाज
    3. नदी रंग जैसी लड़की (एस.आर.हरनोट) रेनू त्रिपाठी
    4. चाँद गवाह (उर्मिला शिरीष) आलोक सिंह
    5. समय, समाज की समस्याओं का जीवंत दस्तावेज : जिधर कुछ नहीं - डॉ. सुनील कुमार
19. **नयी आमद** (नई कृतियों का वर्ष)

सम्पादकीय :

【विपश्यना】

साहित्य का परिवर्तन काल

~~~~~~~~~~

पिछले करीब 50 वर्षों से हिन्दी साहित्य "समकालीनता" की धारा में बहता चला जा रहा है। यह कोई आंदोलन या साहित्यिक वाद न होकर भी सर्वस्वीकृत और व्यापक शब्द बन चुका है।विश्वम्भर नाथ उपाध्याय से लेकर अन्य अनेक आलोचकों, विद्वानों ने इस शब्द की अर्थवत्ता, प्रासंगिकता और अनिवार्यता पर मुहर लगाई है।दो मत नहीं, कि साहित्य की समकालीन धारा ने हिन्दी भाषा को अविस्मरणीय और स्थायी समृद्धि दी है।कविता, आलोचना, कहानी, उपन्यास तथा अन्य गद्य विधाओं में चेतना, हृदय, विवेक और कल्पना को उद्वेलित करने वाली कृतियाँ सामने आयी हैं।यह समकालीनता जिसे युग की केन्द्रीय प्रवृत्ति के तौर पर देखते हैं, लेखक सिद्ध होने की अनिवार्य शर्त है।आज पुनः परिभाषित करने की जरूरत नहीं, कि समकालीन क्या है? परन्तु यह एहसास प्रगाढ़ होता जा रहा कि समकालीनता अब पर्याप्त नहीं।

खासकर नयी सदी के चढ़ते ही नयी प्रवृत्तियों का तापमान बढ़ चला है।मनुष्य के नये गुणधर्म प्रकट होने लगे हैं।कल तक जिसे जीवन का निर्णायक मूल्य मानते थे, वे गैर जरूरी हो चले हैं। जिन चंद विश्वासों के बूते व्यक्ति सारा जीवन काट लेता था, अब उनकी भूमिका ही समाप्त हो चली है। सूचना, तकनीकी, बाजार और अत्याधुनिक वस्तुओं का हस्तक्षेप इस कदर बढ़ गया है, कि वे मानवीय रिश्तों, मूलभूत मूल्यों और आपसी सम्बंधों को संचालित और निर्देशित करने लगे हैं।जीवन की अनिश्चितता अब ठोस सच्चाई है। कल कौन अर्श से फर्श पर होगा, और कौन जमीन से आसमान छू लेगा, कहा नहीं जा सकता।यह उत्तर पूंजीवाद का युग है, जिसे वृद्ध पूंजीवाद की जगह प्रौढ़ पूंजीवाद कहें तो अधिक बेहतर होगा। समकालीनता के कुछ सुनिश्चित मानक थे-जैसे प्रतिरोध, संघर्ष, जनपक्षधरता, राजनीतिक चेतना, प्रगतिशील वैचारिकी, धर्म के पाखंड की आलोचना, यथार्थ प्रियता, तर्कवादी दृष्टिकोण और हाशियाई समाज के प्रति सजग समर्पण। समकालीनता के गुण इतने व्यापक और बहुआयामी हैं, कि उन्हें एक सांस में नहीं समेटा जा सकता। ये आज भी उतने ही मूल्यवान हैं, जितने धूमिल जैसी अग्रधावक प्रतिभाओं के उभार के समय थे। राजनीतिक चेतना से सम्पन्न होना समकालीनता की सबसे खास विशेषता रही। यह
~~~~~~~~~~